International Journal of Applied Research 2018; 4(3): 269-270

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(3): 269-270
www.allresearchjournal.com
Received: 11-01-2018
Accepted: 12-02-2018

लीला देवी
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
जनता कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, ऐलनाबाद, सिरसा,
हरियाणा, भारत

Correspondence
लीला देवी
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
जनता कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, ऐलनाबाद, सिरसा,
हरियाणा, भारत

भाषा और समाज

लीला देवी

प्रस्तावना

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरो पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के भावों व विचारों को आप स्पष्टतया समझ सकता है। संसार का अधिकांश व्यवहार, बोलचाल या लिखा–पढ़ी से चलता है, इसलिए भाषा संसार के व्यवहार का मूल है। पशु–पक्षी आदि जो बोली बोलते है, उससे सुख–दुख आदि मन के विकारो के अलावा और कोई बात नही जानी जाती। मनुष्य की भाषा से उसके सारे विचार स्पष्टतया प्रकट होते है। इसलिए वह व्यक्त भाषा कहलाती है। व्यक्त भाषा की सहायता से मनुष्य के नए विचार भी उत्पन्न होते है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वास के योग्य माध्यम है। भाषा के अभाव में मानव सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से अलग है। प्रायः भाषा को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए लिपि चिह्नों की सहायता लेनी पड़ती है। भाषा तथा लिपि, विचारों (भावों) को अभिव्यक्त करने के दो अभिन्न पहलू है। भाषा संकेतात्मक है अर्थात् इसमें जो ध्वनियाँ उच्चरित होती है, उनका संबंध किसी वस्तु या कार्य से होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा का संबंध एक व्यक्ति से लेकर समस्त विश्व–सृष्टि तक है।

प्रस्तुत शोध पत्र में भाषा के संदर्भ में जानकारी प्रदान करने की कोशिश की गई। विभिन्न भाषा के ज्ञाताओं व विद्वानों द्वारा समय–समय पर भाषा को परिभाषित करके श्रोताओं व पाढ़कों की समस्याओं का समाधान किया गया है। भाषा व समाज एक–दूसरे के पूरक है। एक–दूसरे के बिना दोनों ही अस्तित्वहीन है।

भाषा

भाषा या जबान एक नदी में बहते हुए पानी की तरह जो जहाँ से गुजरती है वहां की दूसरी चीजों को भी अपने साथ समेटते हुए आगे बढ़ती रही है। एक ही धारा से ना जाने कितनी धाराएं निकलती है इसी प्रकार एक ही भाषा से ना जाने कितनी भाषाओं का जन्म होता है। भाषा का संबंध एक व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व–सृष्टि तक है। भाषा के ध्वनि संकेत किसी समाज या वर्ग के आन्तरिक और बाहरी कार्यों के संचालन में सहायक होते है।

भाषा को वैचारिक आदान–प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। 'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह होती है जिसे बोला जाये। महर्षि पंतजलि ने लिखा भी है– ।। व्यक्त वाचि वर्णा येषा त इमे व्यक्त वाचः।।

डॉ0 बाबूराम सक्सेना के अनुसारः ''जिन ध्वनि–चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय करता है उनकी समष्टि रूप से भाषा कहते है।''

डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा हैः कि ''भाषा, मुख से उच्चरित उस परम्परागत, सार्थक एवं व्यक्त ध्वनि–संकेतों की व्यष्टि को कहते हैं जिसकी सहायता से मानव आपस में विचारों एवं भावो का आदान–प्रदान करते हैं तथा जिसका वे स्वेच्छानुसार अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।''

मनुष्य ने ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में जो भी विकास एवं उन्नति की है उसका श्रेय भाषा को ही जाता है इस प्रकार मानव जीवन में भाषा का महत्व व उपयोगिता सबसे अधिक है जो समाज के विकास की आधारशिला है।.

- भाषा भावाभिव्यक्ति का साधन है।
- भाषा मानव विकास का मूल आधार है।
- भाषा मानव सभ्यता व संस्कृति की पहचान है।
- भाषा से विचार शक्ति का विकास होता है।

- भाषा ज्ञान की प्राप्ति में सहायक है।
- भाषा से विचार शक्ति का विकास होता है।
- भाषा ज्ञान की प्राप्ति में सहायक है।
- भाषा मनुष्य के मन के आंकाक्षाओं की सुरक्षित रखती है।
- भाषा एक सामाजिक है।

भाषा और समाज

भाषा और समाज दोनों अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए एक दूसरे पर निर्भर है। भाषा का उन्नयन समाज के द्वारा होता है व्यक्ति समाज के बिना न तो कोई भाषा सीख सकता है और न ही उसका शिक्षण कर सकता है। जीवन और जगत से जुड़ी भाषा मनुष्य जाति की अमूल्य निधि है। इस समय सारे संसार में प्रायः बहुत प्रकार की भाषाएँ बोली जाती है जो साधारणतः अपने भाषियों को छोड़कर दूसरे लोगों की समझ में नही आती। अपने समाज की भाषा तो लोग बचपन से ही अभ्यस्त होने के कारण अच्छी तरह सीख जाते है पर दूसरे समाज या देश की भाषा अच्छी तरह सीखे बिना नही आती। भाषा के बिना मनुष्य मनुष्य नही होता पशु से मनुष्य को अलग करने में भाषा ही वह सीढ़ी है जिसको पार करके वह मनुष्यत्व को प्राप्त करता है। मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ, मैं क्यों हूँ। यह मानव की पहचान है और यह शक्ति तब शुरू होती है जब उसे भाषा मिलती है। भाषा मिलने के बाद यह मनुष्य रूपी जीव सभी पशु पक्षी रूपी जीवों से अलग हो जाता है। भाषा के बिना समाज में मनुष्य की पहचान नही हो सकती है।

अतः सबसे पहले भाषा अपने आप को पहचानने का साधन हैं विश्व में जितने भी देश अग्रणी है, वे अपनी भाषा के कारण ही है। यदि हमें भारत को विश्व में सिरमोर बनाना है तो अपनी भाषा खासकर 'हिन्दी' को मजबूत करना होगा भारतेंदु जी का भाषा के प्रति मूल मंत्र था–

निज भाषा उन्नति लहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल

इस प्रकार हमें समाज में रखते हुए सभी भाषाओं को सीखना चाहिए परन्तु अन्य भाषाओं को साथ–साथ अपनी हिन्दी भाषा को नही भूलना चाहिए।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मानव जीवन में भाषा की भूमिका पर प्रकाश डालना हैं। भाषा के बिना समाज का और समाज के बिना भाषा का कोई अस्तित्व नही हैं। भाषा और समाज एक दूसरे के पूरक है। भाषा जाति को जाति से व्यक्ति को व्यक्ति से तथा राष्ट्र को राष्ट्र से मिलाती हैं। भाषा का भावो से गहरा संबंध है और भाव तथा विचार व्यक्तिगत के आधार है। जब से मनुष्य ने होश संभाला है, तभी से भाषा की आवश्यकता रही है। भाषा चाहे संसार में हर इंसान की अलग–अलग ही क्यों न हो पर अलग–अलग भाषा भी हर इंसान को एक दूसरे से जोड़ती है।

महात्मा गाँधी के अनुसारः ''हृदय की कोई भाषा नही है, हृदय हृदय से बातचीत करता हैं।''

गंगा प्रसाद अग्निहोत्रीः ''भाषा की उन्नति का पता मुद्रणालयो से भी लग सकता है।''

इस प्रकार हम कह सकते है कि भाषा के बिना मानव जीवन अधूरा है। भाषा ईश्वर का दिया हुआ उपहार नही है, इसे धीरे–धीरे धवन्यात्मक शब्दों और जानवरों की बोली से उन्नत होकर इस स्थिति तक पहुँची है। भाषा में सार्थक शब्दों को प्रयोग में लाना चाहिए भाषा मानव की योग्यता व अयोग्यता को सिद्ध करती है। अतः एव हमे हमेशा अच्छी और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में 'भाषा' की हमारे समाज तथा राष्ट्र के लिए महत्ता को स्पष्ट किया गया है कई प्रमुख रचनाकारो ने अपनी कृत्तियों में 'भाषा' शब्द को परिभाषित करके सामान्य पाठक व श्रोताओं को सुविधा प्रदान की है। हिन्दी 'भाषा' से हमें तत्कालिन समाज की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक साहित्यिक परिस्थितियों का पता चलता है। धीरे–धीरे हमारी हिन्दी भाषा ने उन्नति के शिखर पर पहुँचकर पहचान बनाई है। यह सब जानकारी हमें भाषा और समाज दोनों को समझकर ही प्राप्त होती है। जिस विषय में भाषा का अध्ययन किया जाता है उसे भाषा विज्ञान कहा जाता है। भाषा परिवर्तनशील है हर जगह पर भाषा अपना रूप बदल लेती है। इसलिए कबीर नें भाषा को बहता नीर कहा है। भाषा सामाजिक संपति है यह हम समाज में रहकर ही ग्रहण कर सकते है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास – डॉ0 भोलानाथ तिवारी, ज्ञान भारती
2. भाषा–विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी, प्रकाशन– किताब महल
3. सामान्य भाषा विज्ञान– बाबूराम सक्सेना
4. भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा
5. हिन्दी भाषा का इतिहास– धीरेन्द्र वर्मा
6. समसामयिक अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान – प्रो0 कविता रस्तोगी
7. समसामयिक भाषा विज्ञान– वैश्ना नांरग
8. भाषा विज्ञान – आचार्य किशोरी दास वाजपेयी, वाणी प्रकाशन
9. आधुनिक भाषा विज्ञान– कृपाशंकर सिंह, वाणी प्रकाशन
10. भाषा विज्ञान– डॉ0 श्यामसुंदर दास, अनुप्रकाशन